जुलाई–अगस्त 2020

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगे

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 खेलने की चाह

उड़ान

7 मै भी तितली

जल की रानी

8 लाल टमाटर/रानी

9 बीती बांता

10 लॉकडाउन

ज्ञान विज्ञान

13 अन्धविश्वास

जोड़–तोड़

15 राजा के घोड़े

कलाकारी

17 कठपुतली

बात लै चीत ले

18 पद

19 बावरिया

21 माथापच्ची / हीहीही–ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ

ज्योति, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय जमूलखेड़ा

सम्पादन : विष्णु गोपाल

सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक

डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज

प्रूफ़ : सुरेश चंद

वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल

आवरण चित्र : **मोनिका माली**, उम्र 12 वर्ष, राजकीय विद्यालय डांगरवाड़ा

वर्ष 12 अंक 121–122

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन

शुभम गर्ग

निदेशक,

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता

मोरंगे

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर

(राजस्थान) 322001

फोन : 07462–220957

फेक्स : 07462–220460

परिचय

विनोद मीना, कक्षा–7, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय छारौदा

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

खेलने की चाह

किस्मत बैरवा, उम्र–9 वर्ष, समूह–सूरज

मेरा यह मानना है कि बच्चा जबसे जन्म लेता है और जब तक वह बड़ा होकर वृद्ध होता है। तब तक के इस पूरे समय में वह और कुछ करे या ना करे पर कोई न कोई खेल तो खेलता ही है या उसके अंदर खेल खेलने की इच्छा जरूर होती है।

बात तब कि है जब मैं फरिया विद्यालय के लिए खेल शिक्षक के रूप में कार्य कर रहा था। स्कूल स्तरीय वार्षिक खेल नजदीक आ रहे थे। इसलिए मैं विद्यालय की खेल टीम बनाने में लगा था। मैं बच्चों को रोज तैयारियाँ करवा रहा था। इस समय फरिया समुदाय सरपंच के पिताजी दो लड़कियों को प्रवेश दिलाने की बात करने आये थे। उन्होंने बताया कि हमारे यहाँ फार्म पर एक परिवार काम करता है और उसकी दो लड़की और एक लड़का है। वे तीनों बच्चे कभी विद्यालय नहीं गए हैं। मैं चाहता हूँ कि ये बच्चे आपके विद्यालय में आकर पढ़ाई करें। विस्थापित, मजदूर और अशिक्षित परिवारों के लिये तो संस्था हमेशा ही तत्पर रही है। नतीजा हमारे विद्यालय ने इन तीनों को प्रवेश देने के लिए स्वीकृति दे दी और इनके प्रवेश फार्म भी भरवा दिये। अब ये तीनों बच्चे विद्यालय पर आने लगे। धीरे–धीरे समय निकला। ये बच्चे सबसे बात करने लगे, घुलने–मिलने लगे। मैंने देखा कि ये जो दो लड़कियाँ थी वे रोज विद्यालय की छुट्टी के बाद भी स्कूल में रूक जाती थी। जबकी इनको

वापस जाकर काम भी करना होता था। मैने पाया ये लडकियाँ छुट्टी के बाद होने वाली खेल की तैयारी को देखने के लिए वहाँ पर रूकती थी। एक दिन मैंने उन लड़कियों को भी खेल से जोड़ने के लिए उन्हें खेल खेलने के लिए कहा तो वे तैयार हो गई। ऐसा लगा जैसे उन्हे इसी पल का इन्तजार था। मैंने देखा दोनों लड़कियाँ की स्टेमिना बहुत अच्छी है। दोनों बच्ची दौड़ व खेल में पूरी तरह भाग लेने लगी। और उनके खेल में सुधार भी हुआ। फिर जब प्रतियोगिता का समय आया तब मैंने इन दोनों लड़कियों को टीम में शामिल करके टीम प्रतियोगिता में उतारा। यहाँ भी इन्होने टीम को निराश नहीं किया और इनका प्रदर्शन बहुत अच्छा व सराहनीय रहा। जब मैंने उन लड़कियों से बात कि तो उन्होंने बताया कि गुरूजी आज हमें बहुत अच्छा लगा है। हमारी बहुत इच्छा होती थी कि हम भी खेलें, मगर हमें मौका नहीं मिला। आपने हमें खिलाया है। मन की बात करते हुए उनमें से एक भावुक हो गई। उसे देखकर दूसरी भी खुद को रोक नहीं पाई। तब मुझे लगा बच्चे के अन्दर चाहे कुछ और हो या न हो पर खेलने की इच्छा जरूर होती है। इस प्रदर्शन के दम पर इनमें से एक लड़की को राज्य स्तर पर खेलने के लिए चुना गया। मगर ये तो ठहरे विस्थापित श्रमिकों के बच्चे। इनका जीवन इतना व्यवस्थित कहाँ होता है। घरेलू कारण से लड़कियाँ राज्य स्तर पर खेलने के लिए नहीं जा पाई। श्रमिकों का श्रम ही उनकी पूंजी होता है। बड़ी मुश्किल से पढ़ाई के लिए 5 घंटे निकालने वाले बच्चों के लिए एक सप्ताह तक श्रम से दूर रहना उनके परिवार को कितना आर्थिक नुकसान पहुँचा सकता है। ये बात तो वह परिवार ही समझ सकता है। जो कुछ पैसों के लिए अपना श्रम बेचने के लिए विस्थापित होता है।

पृथ्वीराज, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

अंजली माली, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय कुतलपुरा मालियान

मैं भी तितली

उड़ती उड़ती रंग बिरंगी तितली।
फूल फूल पर जाती तितली।
इधर–उधर आती तितली।
अपना मन बहलाती तितली।
डाल–डाल पर जाती तितली।
फूल–फूल खाती तितली।
नन्ही मुन्नी होती तितली।
लाल पीली काली तितली।
छोटी मोटी सारी तितली।
हवा में उड़ती सारी तितली।
फूल फूल को चूमे तितली।
हवा हवा में उड़ती तितली।
घूम–घाम कर आई तितली।
नभ से उड़ती आई तितली।
मै भी तितली, तू भी तितली।

सोना, समूह–उजाला, उम्र–12 वर्ष

जल की रानी

जाला बुनती आई मकड़ी
जाल में फंसी नन्ही मक्खी
देख जाल को आया बुखार
बीमार होकर गई बाजार
बाजार में खाई सुई
मक्खी बोली ऊँई
ऊँई सुनकर आया हाथी
हाथी ने मारी सूंड
सूंड से निकला पानी
पानी बहा आई बाढ़
बाढ़ से निकली मछली
जाल तोडकर खा गई मकड़ी।
बन गई मछली जल की रानी।

राज, समूह–सितारा, उम्र–12 वर्ष

वंदना सैनी, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय जमूलखेड़ा

लाल टमाटर

लाल टमाटर खाऊँगी।
फिर मोटी हो जाऊँगी।
हरी मिर्च खाऊँगी।
फिर पतली हो जाऊँगी।
प्यारा गन्ना खाऊँगी।
फिर लम्बी हो जाऊँगी।
सफेद गोभी खाऊँगी।
छोटी सी बन जाऊँगी।

रानी

चिड़िया रानी आयेगी
अपने पंख फैलाएगी
प्यारा गाना गायेगी
लाल टमाटर लायेगी
हरी मिर्च खायेगी
चूं चूं चिल्लायेगी
फर–फर वो उड़ जायेगी।

दीपिका मीना,
उम्र–11 वर्ष
समूह–सितारा

रिंकु मीना,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–सितारा

बृजेश बैरवा,
कक्षा–8, उदय पाठशाला फरिया

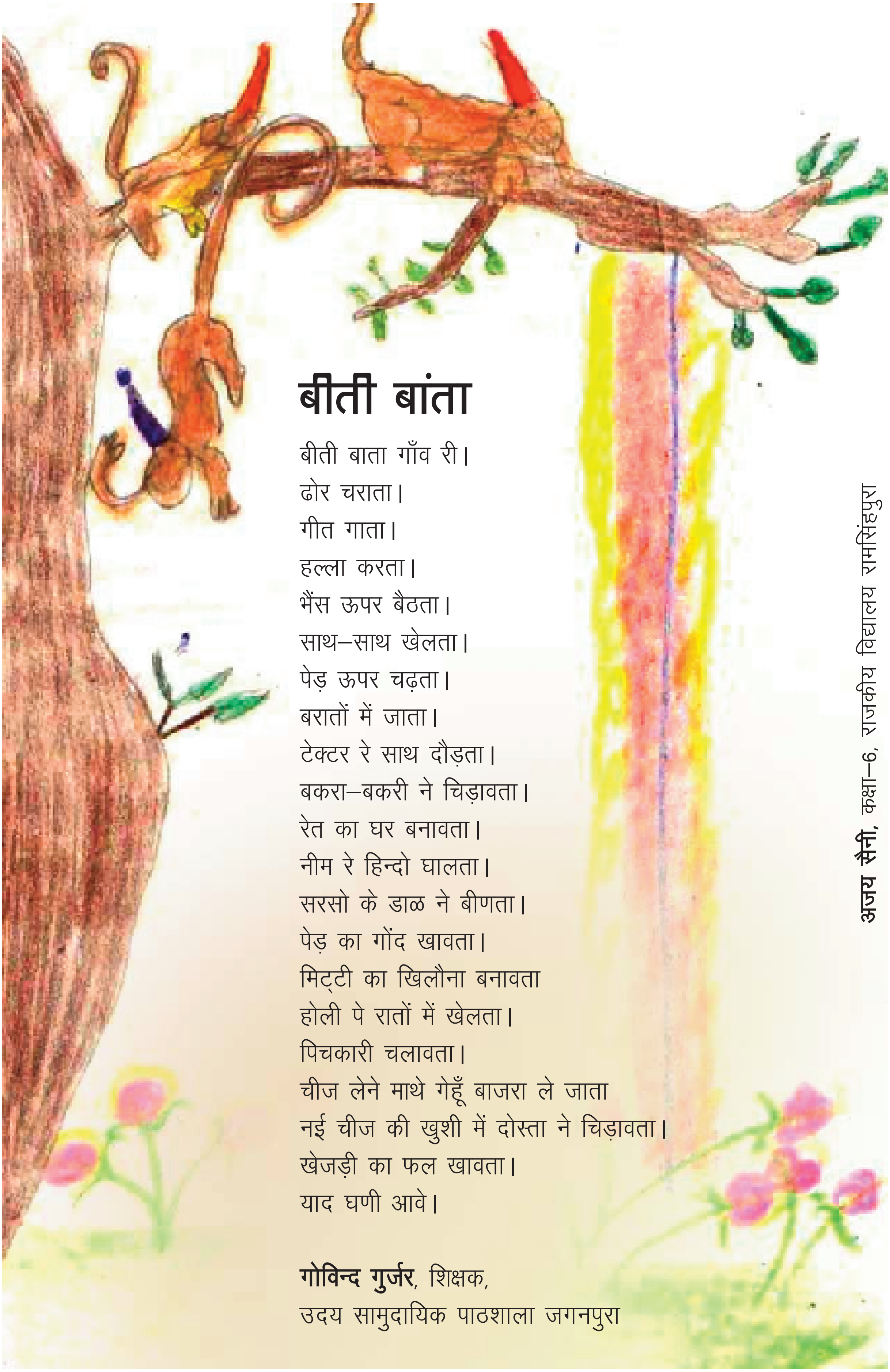

बीती बांता

बीती बाता गाँव री।
ढोर चराता।
गीत गाता।
हल्ला करता।
भैंस ऊपर बैठता।
साथ–साथ खेलता।
पेड़ ऊपर चढ़ता।
बरातों में जाता।
टेक्टर रे साथ दौड़ता।
बकरा–बकरी ने चिड़ावता।
रेत का घर बनावता।
नीम रे हिन्दो घालता।
सरसो के डाळ ने बीणता।
पेड़ का गोंद खावता।
मिट्टी का खिलौना बनावता
होली पे रातों में खेलता।
पिचकारी चलावता।
चीज लेने माथे गेहूँ बाजरा ले जाता
नई चीज की खुशी में दोस्ता ने चिड़ावता।
खेजड़ी का फल खावता।
याद घणी आवे।

गोविन्द गुर्जर, शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

अजय सैनी, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय रामसिंहपुरा

विशाल बैरवा,
उम्र–10 वर्ष, समूह–लहर

लॉकडाउन

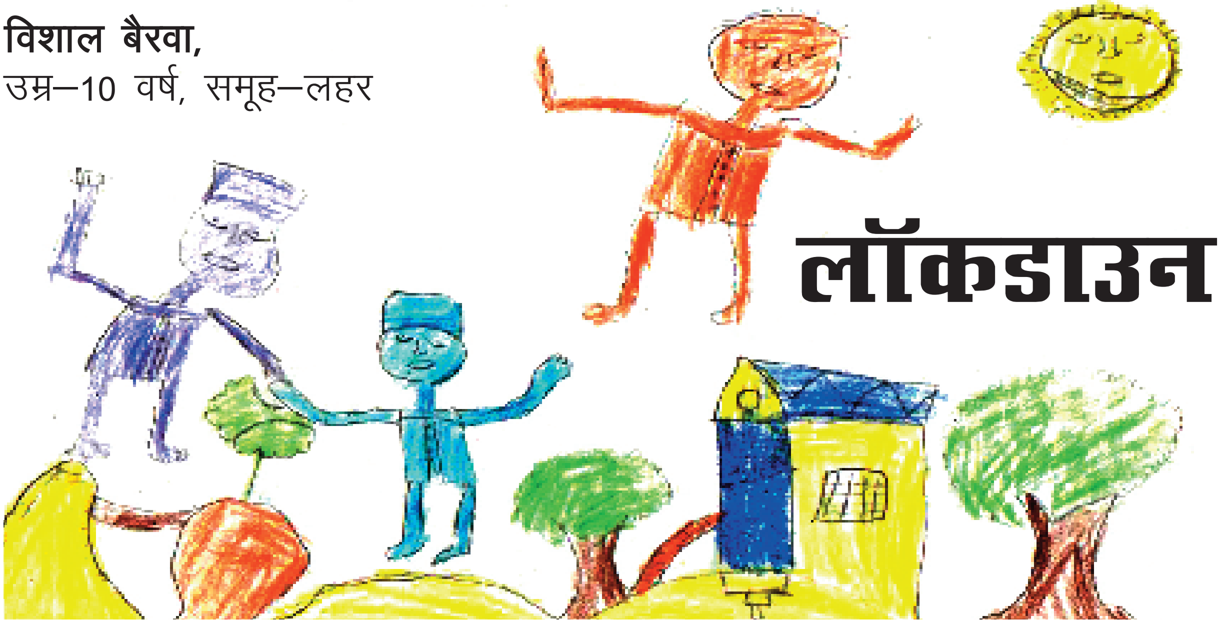

चौथी पास रतन कोरोना–लॉकडाउन से पहले अपने चार बच्चों व पत्नी के साथ जयपुर में मजदूरी करता था। पर मजदूरी से परिवार का खर्चा नहीं चल पाता था। लॉकडाउन की वजह से मजदूरी मिलना भी बंद हो गई। अब दो समय की रोटी का भी संकट आ गया। इसी बीच वह अपने गाँव आ गया। गाँव में एक कच्चा घर था। वह भी फूट गया था। कुछ दिन अपने भाइयों के पास रहकर गाँव में मजदूरी करने लगा।

एक दिन रतन मजदूरी की तलाश में पास के शहर में गया। लगभग सुबह के 11 बज गये पर कोई मजदूरी नहीं मिली। गहरी चिंता में बैठा रतन आते–जाते लोगों को देख रहा था। किसी को जानता नहीं था तभी उसने बाजार में देखा कि एक व्यक्ति ठेले पर चने के भूंगड़े बेच रहा था। रतन भी उसके पास गया और भूंगड़े का भाव पूछा, तो उसने 100 रूपये किलो बताये। रतन भाव सुनकर चोंक सा गया। सौ रूपये किलो। मानों उसने इसके भाव अपनी जिंदगी में पहली बार सुना है। आज उसे कोई मजदूरी नहीं मिली और वह बाजार के जरूरी सामान लेकर अपने घर आ गया। आज सारी रात रतन को नींद नहीं आई।

वह सुबह उठा और अपनी दिनचर्या से निवृत्त होकर अपने गाँव की किराने की दुकान पर चला गया और पता किया कि अभी चने का क्या भाव है? दुकानदार ने अच्छे से अच्छे चने का भाव 40 रूपये किलो बताया। उसने गाँव में और भी एक–दो लोगों से चने का भाव पूछा तो सभी ने लगभग यही बताया। अगले दिन वह बाजार गया और चने के भूंगड़े संकने वाले की दुकान का पता लगाने के बाजार में कई लोगों से पूछा। पूछता–पूछता आखिरकार भूंगड़ें सेकने वाले की दुकान तक पहुँच

गया। रतन ने भूंगड़े सेकने के लिए बातचीत की तो दुकानदार ने 10 रूपये प्रतिकिलो में अच्छे से अच्छे भूंगड़े सेकने के लिए कहा। अब रतन का थोड़ा आत्मविश्वास बड़ा और उसने ठान लिया कि अब वह भी भूंगड़े बेचेगा। इसी आत्मविश्वास के साथ वह अपने घर लौट आया। पत्नी के साथ अपनी सारी योजना साझा की।

पत्नी को रतन की बात अजीब सी लगी, ''कौन खरीदेगा भूंगड़े? भूंगड़े भी कोई बेचने की चीज है? क्या कभी आपने किसी को भूंगड़े बेचते देखा है? कोई साग–सब्जी बेचते तो समझ आता।''

रतन ने कहा, ''मैंने बाजार में एक व्यक्ति को ठेले पर भूंगड़े बेचते देखा है।''

''देखा होगा, पर कौन खरीदता होगा उसके भूंगड़े?'' पत्नी ने बहस की।

निकीता, उम्र–9 वर्ष, समूह–संगम

रतन ने कहा, ''भूंगड़े बेचने में मुनाफा अच्छा और कोई खर्चा भी नहीं है। यहाँ तक की यदि यह 10 दिन भी नहीं बिके तो भी सब्जी की तरह खराब होने की दिक्कत नहीं है। अगर मानों बिल्कुल भी नहीं बिके, तो हम ही थोड़े–थोड़े करके खा लेंगे। इसमें नुकसान वाली कोई बात मुझे नहीं लग रही। हम पहले दिन मात्र 10 किलो चने ही ारीदेंगे। अगर बिके तो इसकी मात्रा को बढ़ाते रहेंगे नहीं तो कोई बात नहीं। करके तो देखते हैं। मात्र 500 रूपये का खर्चा है।''

''पर आज तो हमारे पास मात्र 100 रूपये ही है।'' उसकी पत्नी ने कहा।

तन बोला, ''कोई बात नहीं चने वाले को 2 दिन के लिए उधार रख देंगे।'' आखिरकार बड़ी चर्चा के बाद भूंगड़े बेचने के धंधे पर सहमति बन ही गई। रतन गाँव में एक किसान के पास गया और अपनी सारी योजना उसको बताई। किसान पहले तो उसकी बात पर हँसा फिर बोला, ''अरे!यह धंधा तुझे किसने बताया है?

भला गाँवों में भूंगड़े कौन खरीदेगा? कोई सब्जी थोड़े ही है, जो हर कोई खरीद लेगा।''

रतन ने हंसते हुए कहा, ''अगर कोई नहीं खरीदेगा तो हम ही खा लेंगे। सब्जी की तरह खराब तो नहीं होंगे।''

किसान ने कहा, ''ठीक है रतन, अगर तुम नहीं मानो तो ले जाओ 10 किलो चने। पैसे 2 दिन बात में दे देना।'' रतन किसान से चने लेकर घर आ गया और अपनी भतीजी की साइकिल जो कि उसे स्कूल से मिली थी, को लेकर शहर में भूंगड़े सिकाने के लिए चला गया। दोपहर तक वह भूंगड़े सिकवाकर अपने गाँव की और लौटने लगा। तभी उसके मन में विचार आतया कि 'क्यों न मैं भूंगड़े यहीं से बेचना शुरू कर दूँ।' क्योंकि शहर से गाँव के बीच में 3 गाँव पड़ते हैं। फिर मन करता नहीं कल से बेचेंगे, अभी घर चलते हैं। फिर मन करता कल भी तो इन्हीं गाँवों में आना है, तो क्यों ना अभी से शुरू कर दूं। इसी द्वंद, के बीच उसने भूंगड़े बेचना शुरू कर दिया। आवाज सुनकर बच्चे, बूढ़े और औरते आती, भाव पूछती, कोई भूंगड़े चखती और कोई लेती भी। भूंगड़े की कीमत 100 रूपये किलो से बिल्कुल कम नहीं की। इसी तरह भूंगड़े बिकते गये और उसका आत्मविश्वास बढ़ता गया। शाम 7 बजे तक 900 रूपये के भूंगड़े बेचकर खुशी–खुशी अपने घर आ गया। पत्नी को सारी बात बताई, तो वह भी बहुत खुश हुई। अब वह चने की मात्रा को धीरे–धीरे बढ़ाता रहा और आस–पास के गाँवों में भूंगड़े बेचता रहा। 20 दिन बात उसने 15 हजार रूपये की एक पुरानी मोटरसाईकिल खरीद ली। उस पर एक साइरन हॉर्न लगवा लिया। (मारवाड़ के भूंगड़े ले लो, मारवाड़ के भूंगड़े ले लो) जिससे लोगों को उसके आने का पता लगने लगा। वह 70–75 किलो तक रोज भूंगड़े बेच देता। इस तरह रतन ने अपनी सूझ–बूझ से नया रोजगार शुरू किया।

कविता सैनी, उम्र–13 वर्ष,
उच्च प्राथमिक विद्यालय रामसिंहपुरा

बेनी प्रसाद शर्मा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार–फरिया

अन्धविश्वास

बात उस समय की है। जब मैं अपने परिवार के साथ शाम के समय खाना खा रहा था कि अचानक मेरी तबियत खराब हो गई। जोर से उल्टी होने लगी। मेरे मम्मी–पापा घबरा गये। वैसे मुझे चार–पाँच दिन से साधारण बुखार आ रही थी और मैंने डॉक्टर को भी दिखा दिया था परन्तु उसमें कोई ज्यादा सुधार नहीं आ रहा था। उसी समय हमारे पड़ौस से एक व्यक्ति आया और बोला कि यह तो ऊपर की हवा के चपेट में आ गया है। देखो इसकी आँखे तो पीली हो रही है। इसे माता जी के ले जाओ। हमारे घर वालों में मुझे बिना देर किये मोटर साइकिल पर बिठाकर माता जी के ले गये। वहाँ पर हमने नारियल, अगरबत्ती, प्रसाद तथा अन्य सामग्री चढ़ाई। माता जी के भोपे ने मुझे भभूत दी और कहा, ''आराम आ जायेगा, चिंता करने की कोई बात नहीं है। आप सही समय पर आ गये।'' हमारे घर वालों को थोड़ी तसल्ली मिली और हम वापस घर आ गये।

अगले दिन मैं स्कूल चला गया और फिर वहाँ पर मुझे बुखार आ गया। तभी पीटीआई मेडम मेरे पास आई और मेरी तरफ देखने लगी उसने मेरी आँखों की ओर देखा और कहा, ''विकास तुम्हें तो पीलिया की समस्या है। तुम्हें बिना लापरवाही किये कल सवाई माधोपुर जाकर डॉक्टर को दिखाना चाहिए। अपने मम्मी–पापा को बोलना अगर वह नहीं माने तो मेरी बात करवाना।'' ''ठीक है मेडम, मैं पापा से जरूर कहूंगा।'' मैंने कहा।

मैंने शाम को सारी बात पापा से कही तो पहले तो उन्होंने कहा, ''अरे माता जी सब कुछ ठीक कर देगी। एक–दो दिन और इंतजार करके देख लेते हैं।'' मैंने कहा, ''परन्तु पापा देखो, मुझे तो आज भी तेज बुखार है और मेरी तबियत दिनों–दिन ज्यादा खराब होती जा रही है।'' आखिर मेरे पापा मेरी बात मान ही गये और हम अगले दिन सवाई माधोपुर में डॉक्टर को दिखाने चले गये। वहाँ पर पहले मेरी जाँच की गई और डॉक्टर ने जाँच देखकर कहा कि इसको तो पीलिया की बीमारी है। मैं इसे अभी आठ दिन की दवा लिख रहा हूँ। आठ दिन बाद एक बार फिर आकर दिखाना। मैंने डॉक्टर के बताये अनुसार आठ दिन तक दवा ली और मैं बिल्कुल ठीक हो गया। मैं मेडम को धन्यवाद देता हूँ जिसने मुझे उचित सलाह दी और मैं ठीक हो गया। नहीं तो अंधविश्वास के चक्कर में मेरी जान भी जा सकती थी।

विकास बैरवा, उम्र–13 वर्ष, समूह–हरियाली,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

हनुमान मीना,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–उजाला

राजा के घोड़े

वेणी प्रसाद, शिक्षक, उदय पाठशाला फरिया

एक राजा था जिसे घोड़े बहुत पसंद थे। उसके अस्तबल में अनेक सुन्दर घोड़े थे। लेकिन उसे नही पता था की उसके पास कुल कितने घोड़े हैं? क्योंकी उसे नौ तक ही गिनना आता था। इसलिए उसने घोडों को इस तरह रखा की किसी भी दिशा से गिनने पर नौ घोडे होते। अस्तबल का अनपढ नौकर भी राजा की तरह ही घोड़े गिनता और निश्चिंत रहता। (जैसा चित्र 1 में दिखाया गया है।)

एक दिन एक व्यापारी चार घोडे लेकर अस्तबल में पहुंचा। वह अस्तबल के नौकर से बोला, ''मैं इस नगर में किसी को नहीं जानता आप एक रात के लिए मेरे घोड़े अपने अस्तबल में बांध लो''

चित्र–1

3	3	3
3		3
3	3	3

नौकर ने कहा, ''यह राजा का अस्तबल है और आज रात राजा खुद घोड़ों को गिनने आ रहे है। आप अपने घोड़े कहीं और ले जाओ।''

व्यापारी ने कहा कोई बात नहीं कम से कम मेंरे घोड़ों को पानी तो पी लेने दो। नौकर ने पानी पीने की अनुमती दे दी। जब घोड़े पानी पी रहे थे तो व्यापारी ने नौकर से पूछा की आपने राजा के घोड़ों को तीन लाईनों में क्यों बांध रखा है? तो नौकर ने कहा ये राजा ही जाने। बातों ही बातों में उसे पता चल गया कि राजा और नौकर दौनों को गिनती नहीं आती। व्यापारी ने नौकर को बातों में लगाकर अपने 4 घोड़े भी राजा के 9 घोडों में मिला दिये और उनको कुछ इस तरह बांध दिये की जिधर से भी गिने तो कुल नौ ही आए। (जैसा चित्र 2 में दिखाया गया है।)

घोड़े बांधकर व्यापारी वहां से चला गया। जब रात में राजा आया तो उसने चारों तरफ खड़े होकर घोड़ों को गिना तो घोड़े पूरे 9 थे। राजा प्रसन्न हुआ और नौकर

चित्र–2

2	5	2
5		5
2	5	2

को कहा, ''होशियार रहना नगर में घोड़ों का ठग घूम रहा है।'' यह कहकर राजा वहाँ से चला गया।

अगले दिन व्यापारी फिर आया और उसे इनाम देते हुए कहने लगा, '' भगवान की कृपा से मेरा व्यापार तो अच्छा हुआ। आप मेरी तरफ से ये भेट स्वीकार करें।''

चित्र–3

4	1	4
1		1
4	1	4

इनाम पाकर नौकर खुश हो गया और व्यापारी से बोला, ''आप अपने घोड़ों को पानी पिला लो तब तक मैं आपके लिये भी कुछ लाता हुं। कुछ खा–पीकर जाना।'' यह कहकर नौकर वहाँ से चला गया। जैसे ही नौकर वहाँ से गया व्यापारी ने अपने 4 घोड़े वहाँ से खोले और साथ में राजा के भी 4 घोड़े खोल लिए। बचे हुए घोड़ों को उसने इस तरह बांधा की किसी भी तरफ से गिनने में 9 ही रहें। (जैसा चित्र 3 में दिखाया गया है।)

जब नौकर वहाँ आया तो व्यापारी ने नास्ता किया और जाते–जाते कहा, '' भाई –सावधान रहा करो नगर में घोड़ों का ठग घूम रहा है।''

व्यापारी के जाने के बाद नौकर ने घोड़े फिर गिने तो वे 9 थे। घोड़े गिनकर वह खुशी खुशी अपने काम पर लग गया। राजा और नौकर को आज तक नहीं पता चला कि उनके 4 घोड़े चोरी हो गये हैं।

पर क्या आप समझ पाये की ऐसा कैसे हुआ? अपने जवाब मोरंगे को जरूर भेजें।

स्रोत – विष्णु गोपाल

नेहा, कक्षा–5, उदय पाठशाला जगनपुरा

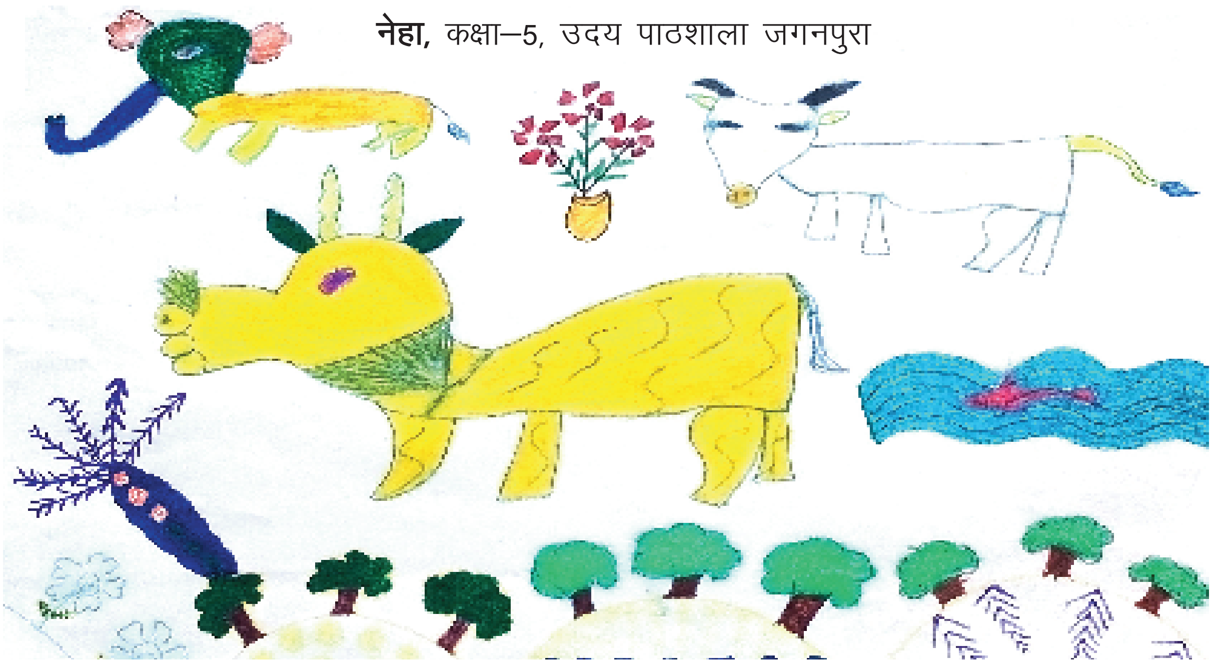

साक्षी बैरवा, कक्षा–6,
राजकीय विद्यालय मेईखुर्द

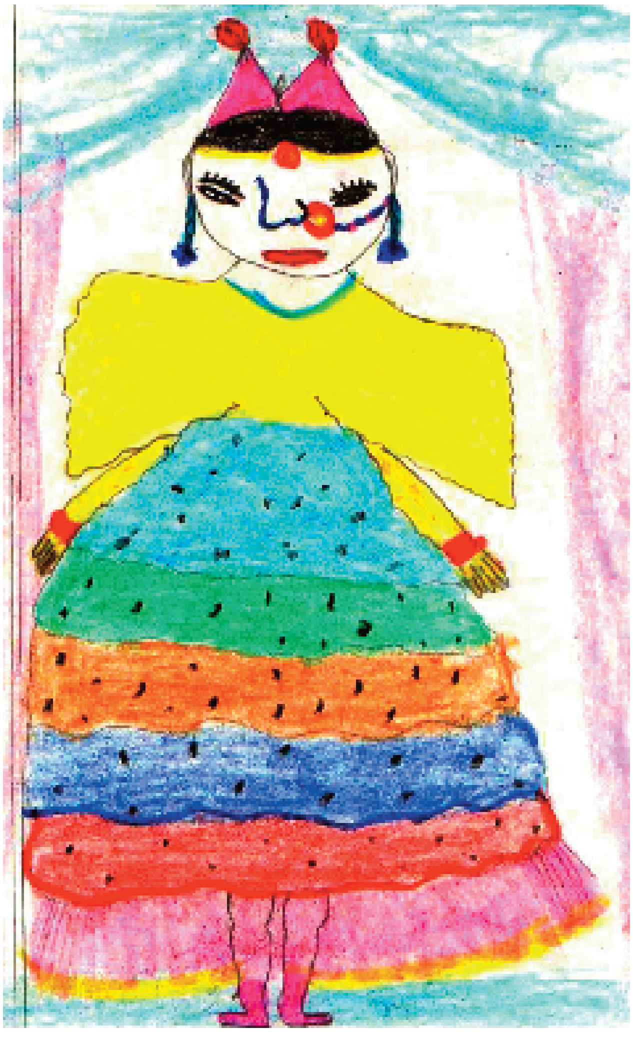

कठपुतली

कठपुतली
गुस्से से उबली
बोली – ये धागे
क्यों हैं मेंरे पीछे आगे?

तब तक दूसरी कठपुतलियां
बोली कि हां हां हां
क्यों हैं ये धागे
हमारे पीछे–आगे?
हमें अपने पावों पर छोड़ दो,
इन सारे धागों को तोड़ दो!

बेचारा बाजीगर
हक्का–बक्का रह गया सुन कर
फिर सोचा अगर डर गया
तो ये भी मर गयी मैं भी मर गया
और उसने बिना कुछ परवाह किए
जोर जोर से धागे खींचे
उन्हें नचाया!

कठपुतलियों की भी समझ में आया
कि हम तो कोरे काठ की हैं
जब तक धागे हैं, बाजीगर है
तब तक ठाट की हैं
और हमें ठाट में रहना है
यानी कोरे काठ की रहना है

भवानी प्रसाद मिश्र

पद

तू लड़ ढोला सरपंची, मैं डाइरेक्टर लड़ूंगी रे,
अररर नौ पंचायत सूं देवर कू खड़ो करूंगी रे।
रेमण्ड को कोट पेरलियो, कुर्तो पेरियो खादी को,
अरर थारी सरपंची न बेचा जेवर लुगाई का।
तोकू मुखिया चुण लियो विकास कराज्यो गांवन को,
अरर अब तो कौन रियो न चरण मोटा नामन को।
अब कै देदे वोट जिठानी तेरा गुण गाउंगी,
अरर जीतया पाछ इन्द्रा आवास दिला दूंगी।
महिला आगी सीट पंचायत जुड़ा दी हताईन पे,
अररर सरपंची लड़बा को शौक लुगायां कै।
ओ लड़ लेती चुणाव के मन ललचावै रै,
छोटी काकी–सासू ठाली टांग अड़ावै रे।
सरपंची को देवर गुड़ सूं मीठो बोले रे,
म्हारी दोराणी तो आगे–पीछे डोले ले।

काली, शिमला मीना, कक्षा–7,
राज. उच्च माध्यमिक विद्यालय छारौदा

खुशी गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारा

बावरिया

निशा सैनी, कक्षा–6, राजकीय प्राथ. विद्यालय रामसिंहपुरा

कानूनी रूप से अवैध कही जाने वाली यह बस्ती सवाई माधोपुर के बीचों–बीच हम्मीर पुलिया के नीचे स्थित है। इनको यहाँ रहते हुए चालिस वर्ष से भी अधिक का समय हो गया है। इतना ही समय मुझे इस शहर में हो गया है। इस बीच न जाने कितनी बार इस बस्ती के पास से गुजरा हूँ पर कभी बस्ती के अंदर नहीं गया। एक अजीब सा डर वहाँ से गुजरते वक्त लगता था। शायद इसकी वजह इनके बारे में पहले से सुनी हुई बातें थी। पर रूबरू होने का मौका कोरोना महामारी के चलते मिला। जब ग्रामीण शिक्षा केन्द्र की ओर से राशन सामग्री बांटने के लिए इस समाज के बीच गया।

बावरिया समाज अपना जीवन मांगकर व मेहनत मजदूरी करके चलाता है। यह समाज पहले से ही काफी अशिक्षित और पिछड़ा हुआ है। अक्सर इनकी बस्तियाँ तथा–कथित समाज के बाहर 'झुग्गीनुमा' होती हैं। कोई भी समाज इनके साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखता है। लोग यहाँ आने से डरते हैं। तमाम चकाचौंध के बीच रहते हुए भी इनके पास बिजली, पानी, शिक्षा स्वास्थ्य जैसी जरूरी चीज नजर नहीं आती। एक गठरी में सामान को बांधकर अपनी रोजी–रोटी का जुगाड़ करने निकल जाते हैं और शाम को आकर अपनी गठरी को खोलते हैं। आस–पास का कचरा इनका इंधन होता है और तीन पत्थर का चूल्हा। इस तरह पांच मिनट में तैयार किये गये किचन में अपना खाना पकाते हैं, खाते हैं और सो जाते हैं। इनकी गठरी को आवारा कुत्तों और सुअरों के अलावा किसी से खतरा नहीं होता। सभ्य समाज के कोर्ट कचहरी इनकी पहुँच के बाहर हैं। इसलिए इन्होंने अपनी व्यवस्था बना रखी है। ये लोग अपने में से एक व्यक्ति को अपना मुखिया चुनते है। और

बलराम शर्मा, कक्षा–7, राजकीय अपर प्राईमरी स्कूल रांवरा

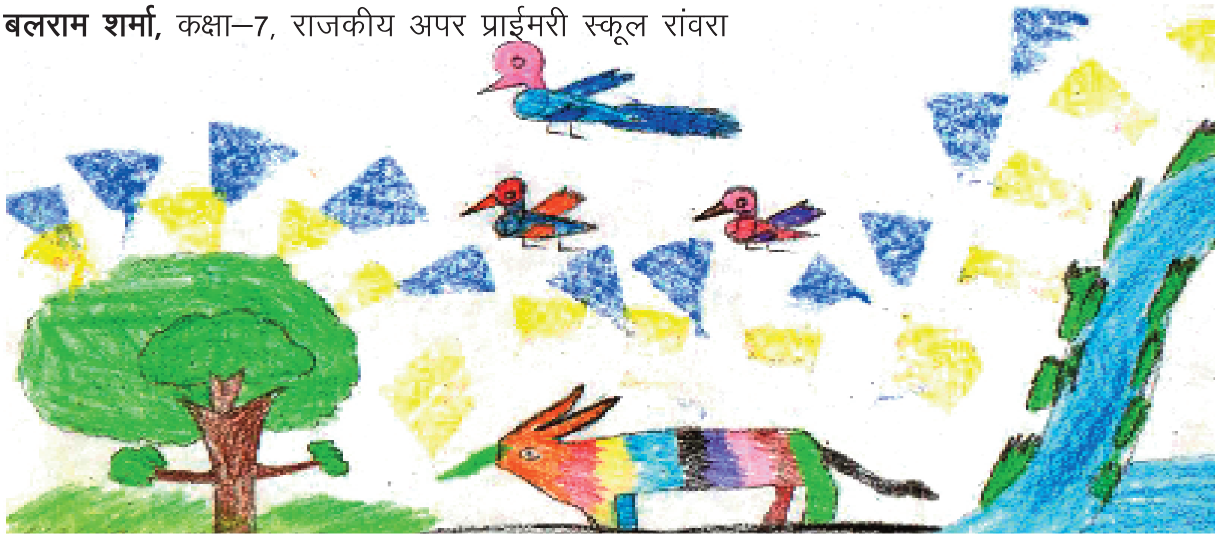

सभी मुखिया की बात मानते हैं। जब भी इनका आपस में किसी बात को झगड़ा हो जाता है। तो ये अपनी समस्या मुखिया के पास लेकर जाते हैं। मुखिया की राय ही इनके लिये सुप्रीम कोर्ट का फैसला होता है। मुखिया के फैसले के खिलाफ कोई नहीं जाता। जब भी बस्ती में कोई मुसीबत आती है। या किसी को कोई तकलीफ होती है तो ये मुखिया से मदद मांगते है। मुखिया जो आर्थिक रूप से तो बहुत ज्यादा सक्षम नहीं होता लेकिन मुखिया होने के नाते उसकी जान पहचान बहुत से सभ्य लोगों और संस्थाओं से हो जाती है। जिनसे सम्पर्क कर वह लोगों की मदद करता है। पिछले ही दिनों एक महिला को प्रसव पीडा हो रही थी। हालात इतने खराब हो गये थे की उसे तुरंत कोटा ले जाने की नोबत आ गई। मुखिया ने बस्ती के हर व्यक्ति से पैसे जमा किये। जिससे जो बन पड़ा मदद की। पर वे काफी नहीं थे तो उसने बाहरी व्यक्तियों को फोन लगाकर मदद मांगी और तीन से चार घंटे में 20 हजार रू. और खून की व्यवस्था कर दी। कोरोना के कारण आने जाने के साधन बंद थे तो महिला को टेक्सी द्वारा कोटा भिजवाने का प्रबंध किया। अगले दिन महिला का सफल ऑपेरशन किया गया और माँ व बच्चे दोनों को बचा लिया गया। मुखिया ने सभी बाहरी मददगारों का शुक्रिया अदा किया। यह घटना इनकी आंतरिक न्याय और सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था को दर्शाती है। इनका नेतृत्व, पारद. र्शिता, विश्वास और सहयोग देखकर तो सभ्य समाज को भी जलन होगी। जहां चारो तरफ भ्रष्टाचार और अकर्मण्यता का बोल–बाला है।

विविधताओं से भरे भारतीय गणतंत्र में ऐसे हजारों समुदाय हैं जो अपनी स्थानिय व्यवस्था के चलते त्वरित न्याय, सहयोग और सुरक्षा पाते हैं। यही वजह है कि मुख्यधारा में जुड चुके समुदाय भी अपनी व्यवस्थाओं और परमपराओं को नहीं छोड़ते।

विष्णु – स्रोत (मानसिंह, राधेश्याम)

माथापच्ची

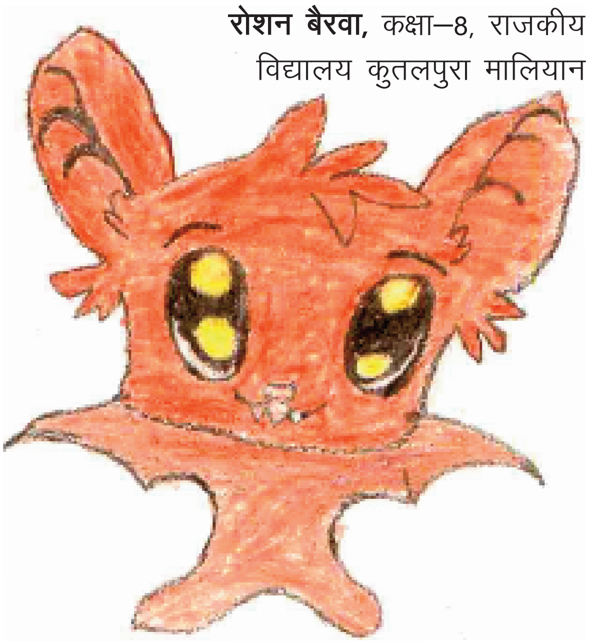

रोशन बैरवा, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय कुतलपुरा मालियान

1. आम गिरा टपाक से। देखे दो जन। देखा जो तो भाग्या कौनी, भाग्या कोई और। भाग्या जो तो उठाया कौनी, उठाया कोई और। उठाया जो तो खाया कौनी, खाया कोई और। खाया जो तो पिटे कौनी, पिटा कोई और। पिटा जो तो रोया कौनी रोया कोई और।

2. हरी मुदंड़ी लाल नगीने, पहने बार–त्यौहार,
पहर्या सूं न खूटे (खुले) फिरग्या (आकर चले गये) लाख सुनार।
3. अंदर से लाल, बाहर से हरा।
4. बाहर से पीला अंदर से सफेद।
5. अंदर से पीला बाहर से हरा ।

सूरज सैनी, समूह–उजाला, उम्र–12 वर्ष

हीहीही ठीठीठी

1. सोनू : तुमने इतने छोटे बाल क्यों कटवा रखे हैं?
मोनू : बाल काटने वाले के पास तीन रूपये खुल्ले नहीं थे। इसलिए मैने तीन रूपये के बाल और कटवा लिए।
2. जादूगर : बच्चों आज मैं इस रूमाल को जादू से कबूतर बनाकर दिखाऊंगा।
बच्चे : इसमें कौन सी बड़ी बात है। हमारे टीचर तो हमें बिना किसी जादू के ही रोज मुर्गा बनाते हैं।

नौरतन कुम्हार, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय जमूलखेड़ा

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

शिवानी बैरवा, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय मेईखुर्द

नील गगन में पतंग उड़ी
काली, पीली, नीली, लाल।

सूरज सैनी, *समूह–उजाला, उम्र–12 वर्ष द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजें।*

एक बहुत सुन्दर जंगल था। उसमें तरह तरह के पेड़ पौधे थे। उन्में बहुत सुन्दर सुन्दर रंग बि. रंगे फूल आते थे। उस जंगल में तितलियों का एक समूह भी रहता था। सब की सब तितलियां एक जैसी और भूरे रंग की थी। जब वे फूलों का रस चूसने जाती तो फूलों को देखकर सोचती कितने सुन्दर – सुन्दर फूल है। काश हम भी इनकी तरह सुन्दर होते..

विष्णु गोपाल *द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।*

महेन्द्र मीना, कक्षा–6,
राजकीय विद्यालय खण्डेवला

आकाश गुर्जर, उम्र–8 वर्ष, समूह–झरना

पहेलियों के ज़वाब –

1. आंख 2. मेहन्दी 3. तरबूज 4. केला 5. आम

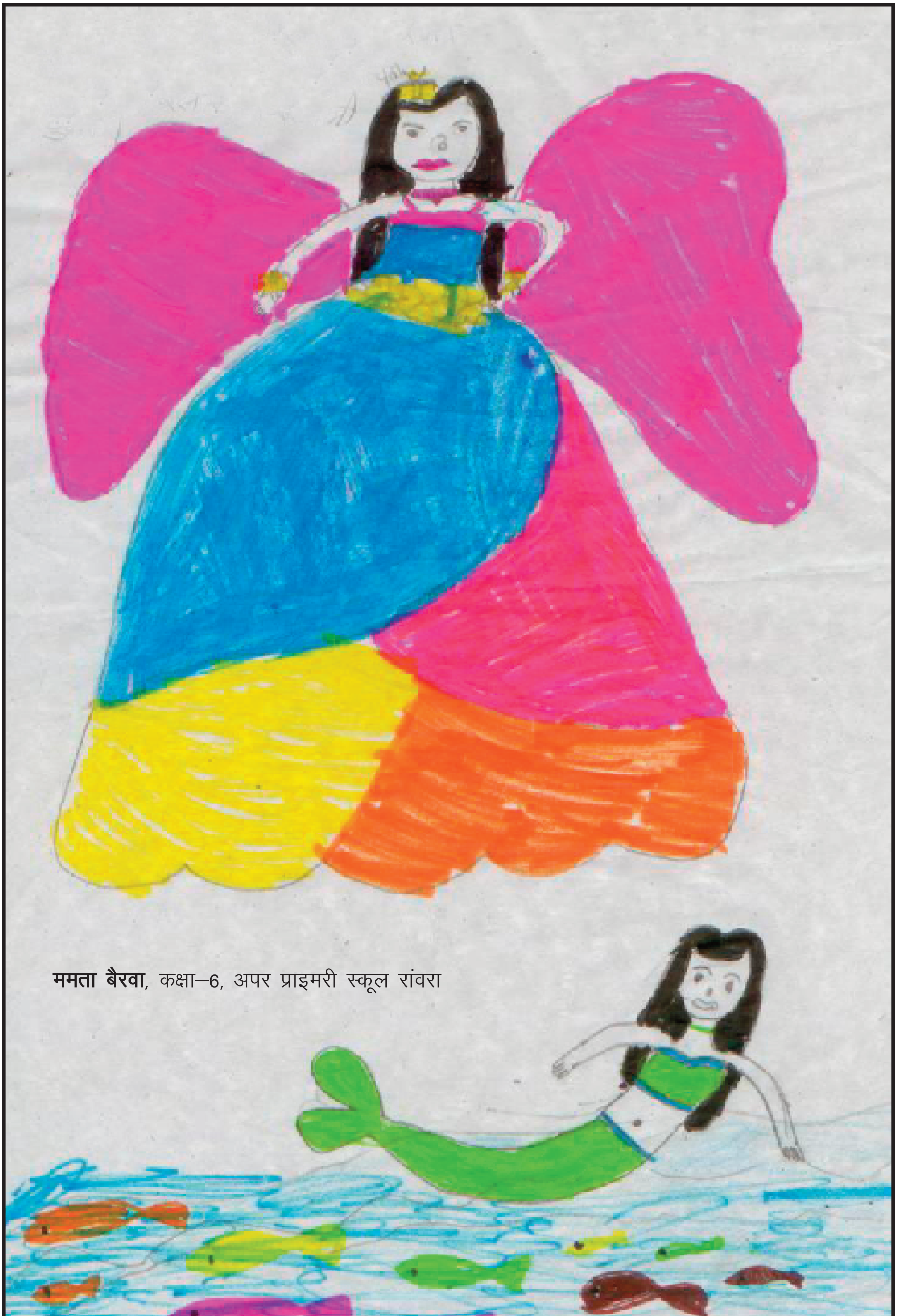

ममता बैरवा, कक्षा–6, अपर प्राइमरी स्कूल रांवरा